कलामे अहसास

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

Last Updated: 04-June-2020

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه ﷺ

कलामे अहसास

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

वो मां है

उसकी फित्रत में कोई जफा नहीं होती
वो मां है जो कभी बे वफा नहीं होती

दामने दर्द में लिपटी हुई है जिसकी कहानी
जो अपने बच्चों से कभी ख़फा नहीं होती

अपने लख़ते जिगर की खातिर ना जाने क्या क्या
उसके होंठों पर कभी कोई शिकवा नहीं होती

इन्सां को जां देती है अपनी जां देकर
गोया उसे अपनी ज़िन्दगी की कोई चाह नहीं होती

बच्चों का पेट भर जाए बस इसी फिक्र में
जिसे अपने निवालों की कोई परवाह नहीं होती

बिस्तरे मर्ग पे कप्ते होंटो से वो कह गईं
मां की खिदमत से कोई दुनिया तबाह नहीं होती

मां को रुलाने वालों दुनिया में सोच लो ज़रा
वहां जन्नत में उनकी कोई जगाह नही होती

उसकी शानो-अजमत का कैसे हो बयां शाकिर
जिस्की रजा़ बिना जन्नत भी अता नहीं होती

- - -

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

ये कैसी जुस्तूजू है ...?

तेरी बारगाह से हमें मांगना भी नहीं आता
हाथों को फैलाएं हैं मगर रोना नहीं आता

ये कैसी जुस्तूजू है, ये कैसा है जुनू
ज़िन्दगी तो मिली है मगर जीना नहीं आता

ऐ खुदा मुझे भी मदीने का मुसाफिर बानादे
मंज़िल तो पता है मगर रास्ता नज़र नहीं आती

सूखे पत्तों की मानिंद बिखर रही है ज़िन्दगी
क्या करूं बहार में मुझे खिलना नहीं आता

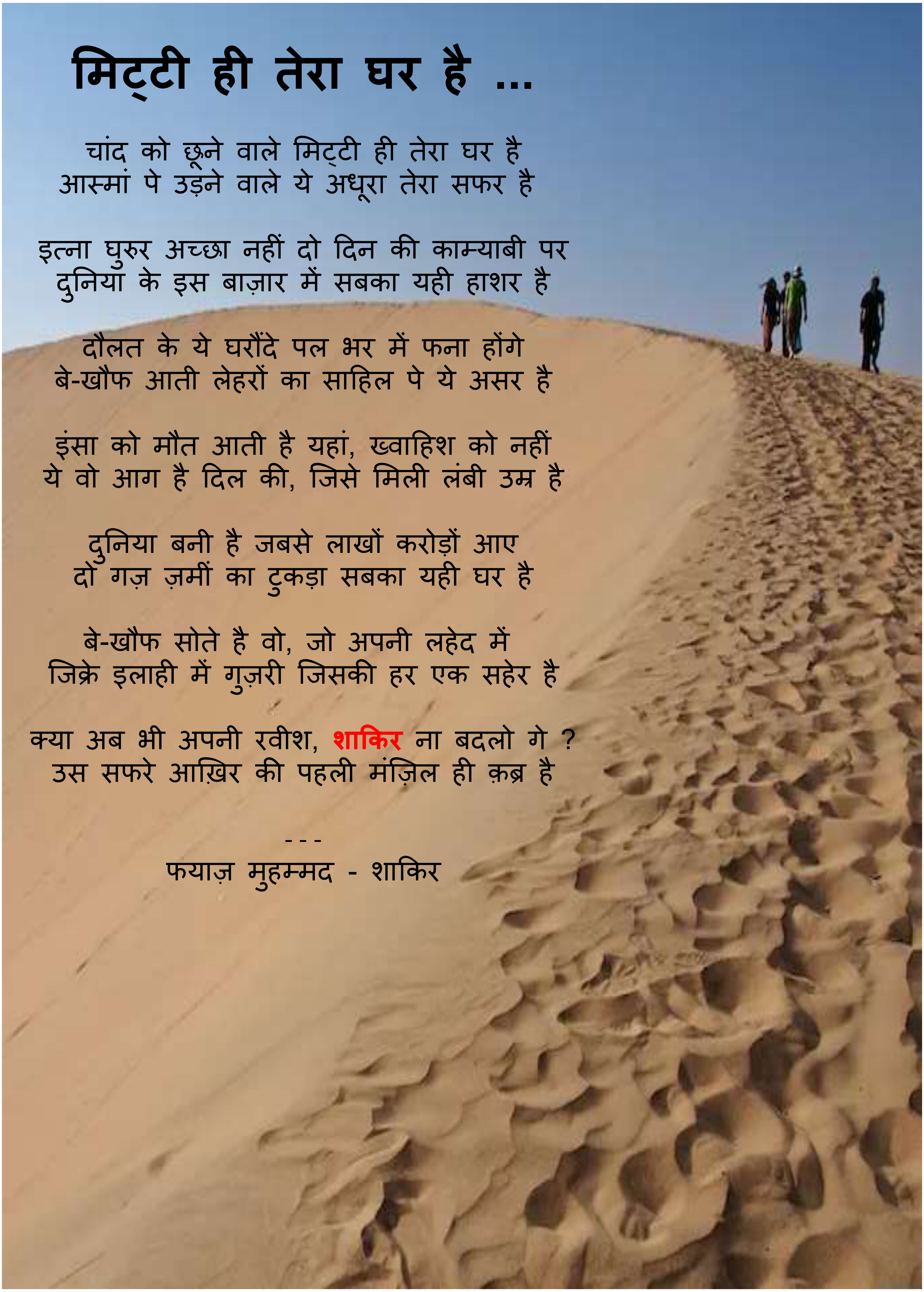
जब भी कदम उठाएं हैं जनिबे मंज़िल मगर
अपनों से जूदा होकर मुझे चलना नहीं आता

तेरे एहसानो का बदला हम कैसे चुकाएं या रब
क्या करूं अदाए शुक्र करना हमें नहीं आता

इस बेख़याली में **शाकिर** कब तक उम्र गुजारोगे
क्या गुनाहों से अपना दामन छुड़ाना तुम्हें नहीं आता ?



\- - -
फयाज़ मुहम्मद - शाकिर



मिट्टी ही तेरा घर है ...

चांद को छूने वाले मिट्टी ही तेरा घर है
आस्मां पे उड़ने वाले ये अधूरा तेरा सफर है

इत्ना घुरुर अच्छा नहीं दो दिन की काम्याबी पर
दुनिया के इस बाज़ार में सबका यही हाशर है

दौलत के ये घरौंदे पल भर में फना होंगे
बे-खौफ आती लेहरों का साहिल पे ये असर है

इंसा को मौत आती है यहां, ख्वाहिश को नहीं
ये वो आग है दिल की, जिसे मिली लंबी उम्र है

दुनिया बनी है जबसे लाखों करोड़ों आए
दो गज़ ज़मीं का टुकड़ा सबका यही घर है

बे-खौफ सोते है वो, जो अपनी लहेद में
जिक्रे इलाही में गुज़री जिसकी हर एक सहेर है

क्या अब भी अपनी रवीश, **शाकिर** ना बदलो गे ?
उस सफरे आख़िर की पहली मंज़िल ही क़ब्र है

\- - -

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

ये आख़री सफर है मेरा

मेरी ख़ाक पर वो आंसू क्यूं बहा रहे हैं
लगता है अपना रोना दुनिया को दिखा रहे हैं

शाना-ब-शाना साथ रहे जीसके हम उम्र भर
आज वही अपने शानो पर मुझे उठा रहे हैं

ता उम्र नए कपड़ों की आरज़ू न की मैंने
ये कौन-सा लिबास आज बिन मांगे पेहना रहे हैं

जिसकी खातिर सांस टूटी थी, वो कहां थे ?
ख़ैर हो, हमारी नमाज़ कोई और तो पढ़ा रहे हैं

कितनी सस्ती होगई आज ये फूलों की लड़ियां
किस शान से वो मेरी तुर्बत सजा रहे हैं

ये आख़री सफर है मेरा, ए लोगों अल्विदा
अब सरे-ख़म किए खुदा के हुज़ूर जा रहे हैं

उफ्फ, दो गज़ ज़मीं का टुकड़ा शाकिर तुम्हारा घर है
अब अपने आमाल को देख क्यूं घब्रा रहे हैं

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

तिनके तिनके से बनाएं हैं आशियां हम ने

तिनके तिनके से बनाएं हैं आशियां हम ने
ख्वाबों से सजाएं हैं गुलिस्तां हम ने

शबनम की ताज़गी तो हर फूलों का मुकद्दर है
कांटों की किस्मत में देखी बरबादियां हम ने

गैरों ने मेरी बातों को बड़ी ध्यान से सुना
अपनों की आंखों में देखा तुफां हम ने

गौ़ता खा रही थी कश्ती मेरी मौजों में
तूफाने-वक्त में खो दिए नामो-निशां हम ने

दबे पांव आती थीं सदाएं सहेर होने तक
दीवारों पर देखीं कुछ परछाईयां हम ने

थीं बंदिशें मुसल्लत, मुस्कुराते चेहरों पर
परदेस में जाकर दिए कई इम्तेहां हम ने

काफिला-ए-ज़िन्दगी मेरा ख़मोशी से गुज़र गया
सरे-राह बांट दिं कई खुशियां हम ने

ज़िक्र कैसे बयां अहो **शाकिर** अपनी हाले ज़ार का
अश्कों में डूबी देखीं कई दास्तां हम ने

- - -

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर



मैं इंतेज़ार में हूं ...

अभी मां रोटी पकाएगी मैं इंतेज़ार में हूं
अपने हाथों से खिलाएगी मैं इंतेज़ार में हूं

ईद का दिन हर साल की तरह आजाता है लेकिन
वो नए कपड़े लाएगी मैं इंतेज़ार में हूं

न-जाने कितने फाक़े मेरी खा़तिर गुज़ार दिए
शायद आज सालन बनाएगी मैं इंतेज़ार में हूं

भूके पेट बिस्तर पर नींद तो आती नहीं लेकिन !
थप्कियां देकर सुलाएगी मैं इंतेज़ार में ह

मौजे हवादिस की लिल्लाह वो शाम ज़रूर होगी
सुबह खैर की आएगी मैं इंतेज़ार में हूं

शाकिर ! न घबराना मौसमे खिजां में कभी
बहार इक दिन छाएगी मैं इंतेज़ार में हूं

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

किताबे ज़िन्दगी का इक सादा पन्ना हूं मै



किताबे ज़िन्दगी का इक सादा पन्ना हूं मै
आगाज़ से अख़िर तक वो खिलौना हूं मै

ये आज़माइशो इम्तेहां के दौर हैं मेरे
साहिल की तमन्ना है जिसे वो सफ़ीना हूं मैं

आग में जल कर ही मुझ में निखार आएगा
ऐसा लगता है कोई ज़ेवर या सोना हूं मैं

हालात की चक्की में को रोज़ पिस्ते हैं
वो माथे से टपकता इक पसीना हूं मैं

तराश कर जिस्तरह घर में सजा लिया उसने
जैसे अंघुटी में जड़ा कोई नगीना हूं मैं

ज़बां खमोश है लेकिन आंखों में नमी **शाकिर**
ये कैसी गुफ़ुतुगु है जो हां या ना हूं मैं

\- - -

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

ज़िन्दगी की धूप से टकराना अभी बाकी है

ज़िन्दगी की धूप से टकराना अभी बाकी है
कुछ और सवालों को सुलझाना अभी बाकी है

इक अर्सा, घर से दूर हूं लेकिन !
कुछ और वादों को निभाना अभी बाकी है

इक बाग-बां की तरह आशियां को सिचां मैंने
कुछ और फूलों को बचाना अभी बाकी है

इक आदत सी होगई अपनी ख़्वाहिश को मार कर
कुछ और तमन्नाओं को सूली चढ़ना अभी बाकी है

इक लफ्ज़ में दर्द का बयां आसां नहीं है **शाकिर**
कुछ और ज़माने की ठोकरें खाना अभी बाकी है

\- - -

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

मिज़ाजे वक़्त (रूबाई)

उफ़, पल में तोला पल में तमाशा हुआ
सारे ज़माने में ये कैसा तमाशा हुआ
हालत जैसी भी हो बदल्ती ज़रूर है
वक़्त जो भी मिला जैसे तराशा हुआ

बदल्ते वक़्त के मौसम को हम क्या कहेंगे
तूफां से हुई तबाही को हम क्या कहेंगे
टूटी हुई कश्ती दरिया में डग-मगा रही है
पत्वारे-सब्र अगर छुटा तो फिर हम क्या कहेंगे

कलाई में घड़ी पहेन्ना अब मैंने छोड़ दिया
वक़्त को हर वक़्त देखना अब मैंने छोड़ दिया
गर वक़्त अच्छा होतो हर बात अच्छी है यहां
लोगों पर यकीं करना अब मैंने छोड़ दिया

ये मिज़ाजे वक़्त शाबो रोज़ बदल जाते हैं यहां
लोग नक्ली हंसी चेहरे पर दिखलाते हैं यहां
कौन चलेगा साथ ये वक़्त ही बताएगा **शाकिर**
बे-बाक रिश्तों का खून कर जाते हैं यहां

- - -

(फयाज़ मुहम्मद - शाकिर)



बे-वजहा मुस्कुराने की कोशिश कर रहा हूं

बे-वजहा मुस्कुराने की कोशिश कर रहा हूं
कुछ अपना ग़म छुपाने की कोशिश कर रहा हूं

वो मेरे हालात से वाकिफ हों या ना हों
बस अपना दर्द मिटाने की कोशिश कर रहा हूं

जहाँ आंधियों ने बिखेरा है मेरे आशियां को
वहीं अपना घर सजाने की कोशिश कर रहा हूं

ये वक़्त की साज़िशें हैं या हालात का तकाज़ा
जाने क्यूं खमोश रहने की कोशिश कर रहा हूं

अक्सर क़दम डग-मगा जाते हैं ज़िन्दगी की धूप में
बस खुदको साबित रखने की कोशिश कर रहा हूं

उफ़, कितने नशेबो-फ़राज़ **शाकिर**, ज़िन्दगी में आ रहें हैं
रोज़ नए फितनों से लडने की कोशिश कर रहा हूं

\- - -

(फयाज़ मुहम्मद - शाकिर)

टुकड़ों टुकड़ों में बटा वो हिंदुस्तां देख रहा हूं

इन ख़ामोश आंखों में तूफ़ां देख रहा हूं
आह में डूबी हुई सिस्कियां देख रहा हूं

अब इज़्हारे ख़याल करने से भी यहां डर लगता है
हर दिल से उठ-ता हुआ धुवां देख रहा हूं

आब्रू किसी की जब ख़ाक हुई यहां पर
इंसानी शक्ल में छुपा हैवां देख रहा हूं

ख़्वाबे ग़फ़्लत की नींद अच्छी नहीं मुसलमानों
बे-ख़तरो चार-सू आंधियां देख रहा हूं

ज़र्द पत्तों की मानिंद ख़मोशियां फैली हुई हैं
अर्से से छाया मौसमे-ख़िजां देख रहा हूं

हालात सुधर्ने में जाने ओर कित्ना वक्त लगेगा ?
भीड़ में खड़े हर शक्स को परेशां देख रहा हूं

उफ़ 'नामे-मज़हब पर यहां कित्नी सियासत है **शाकिर** !
टुकड़ों टुकड़ों में बटा हिंदुस्तां देख रहा हूं

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

बचपन की बहारें छूटे इक ज़माना होगया

बचपन की बहारें छूटे इक ज़माना होगया
मिट्टी के घरोंधे छूटे इक ज़माना होगया

जाने कित्नी ठोकरें हैं सेहराए ज़िन्दगी में
किसी साए को यहां देखे इक ज़माना होगया

शहेर की भीड़ में तुम ने ये क्या हालत बनाली
अपनी शक्ल आएने में देखे इक ज़माना होगया

ऐ बादलों ज़रा थम के बर्सो ये प्यासी जमीं है
यहां खेतों ने बारिश को देखे इक ज़माना होगया

ये टूटा हुआ सफ़ीना है फिर भी सफर कर रहा हूं
मेरी कश्ती ने साहिल को देखे इक ज़माना होगया

उस कश्ती का दरिया में कौन होगा निगेहबां शाकिर
के जिसे मझदार में छोडे इक ज़माना होगया

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

वक़्त के तकाज़ों को अब तुम्हें समझना होगा

मोब-लॉन्चिंग, ३-तलाक़, दिन शरीयत पर हम्ला ओर मुदाखिलत पर एक ताज़ा कलाम

वक़्त के तकाज़ों को अब तुम्हें समझना होगा
ख़्वाबे-ग़फ्लत की नींद से अब तुम्हें उठ्ना होगा

ये दुनिया की मस्तो-बे-खुद रंगीनियां भुला कर
दिनो-शरीयत की डगर पे अब तुम्हें चलना होगा

गुलशने-दिन को हमेशा सर-सब्ज़ रख्ने के लिए
इल्मे दिनो-शरीयत अब तुम्हें सीख्ना होगा

तलाक़े-सलासा के मसलों में उलझनें से पहले
इसे अहले इल्म से अब तुम्हें समझना होगा

यूं भीड़ के कुत्तों से बचने के लिए हमेशा
इक शेर की तरह यहां अब तुम्हें जीना होगा

फक़त तस्बीह के दानों से यहां काम नहीं चलेगा
सरे-मैदां सफे-अव्वल में अब तुम्हें उतरना होगा

लाख मिज़ाजे-वक़्त बदल जाए नज़रों के सामने
खुद ही राहे-हक अब तुम्हें चलना होगा

ला-तब्दीला ली-कलिमातिल्लाह ये फ़रमाने-हक निशां है
सारी दुनिया को इसका मतल्ब अब सीखना होगा

सदा सर झुकाए रेहना ये शाने-मोमिन नहीं है **शाकिर**
इक मर्दे-मुजाहिद की तरह यहां अब तुम्हें जीना होगा

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर



साहिल पे देखो आसारे-तूफां नज़र आ रहे हैं
अपनी बर्बादी के कुछ सामां नज़र आ रहे हैं

टूटी कश्ती से यूं कब तक सफ़र करते
दरिया में डूबने के इमकां नज़र आ रहे हैं

इक अर्सा रिश्ता निभाया अहले-वतन से फिर
क्यूं आज हम से वो बद-गुमां नज़र आ रहे हैं

जिन हुक्मरानों के हाथ मुल्क की भाग-दौड़ है
क्यूं आज सरे-आम वो बद-ज़बां नज़र आ रहे हैं

इतने तन्हा तो आज से पहले मुसलमां कभी ना थे
अब अपनी ही ज़मीं पर हम परेशां नज़र आ रहे हैं

उफ़, दुआओं में शाकिर अब वो तासीर ना रही लेकिन
फिर भी मुसलमां तेरे दर पे नालां नज़र आ रहे हैं



फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

आसारे-तूफां नज़र आ रहे हैं



हमें डर लग्ता है

तेरे शहेर की गली-कुचों से हमें डर लग्ता है
अब गैरों से नहीं अपनो से हमें डर लग्ता है

कई तूफां मेरी ज़िन्दगी में आकर चले गए
अब हवा के झोंकों से हमें डर लग्ता है

उफ़, सियासत की आड़ में ये खुं-रेज़ियां !
अब मौत के तमाशों से हमें डर लग्ता है

ये आह में डूबी सिसकियां जाया नहीं होंगी
अब मज़लूम की ख़मोशियों से हमें डर लग्ता है

इक बर्फ की मानिंद पिघल रही है ज़िन्दगी हमारी
अब साहिल से टक्राती लहरों से हमें डर लग्ता है,

फ़कत इक बार जिस्म से रूह जुदा होती है मगर
अब मुर्दों से नहीं ज़िन्दों से हमें डर लग्ता है

इस गूंगे शहेर में किस से क्या पूंछे शाकिर
अब बातों से नहीं सवालों से हमें डर लग्ता है

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

वतन की मोहब्बत

वतन की मोहब्बत का मुझ से इम्तेहां ना लो
मै कौन हूं ये पूछ कर मेरी जां ना लो

नाजो़-फख्र है हमें भी इस सर-ज़मीं पर
ये मेरी भी ज़मीं है इसका आस्मां ना लो

खुने-वफा हमारी रगों में भी छुपा हुआ है
खुदारा हम से हमारी ये तारीखे-दास्तां ना लो

जज़्बाए-जां फिदा है इस खा़के-दिल नशिं पर
ये जान है हमारी हम से ये जहां ना लो

सारे ज़माने में हमारी यही पेहचान है
इस ज़मीने-हिन्द से हमारी ये पेहचां ना लो

वतन की मोहब्बत भी अलामते-ईमान है शाकिर
वास्ता खुदा का हम से ये हमारा ईमां ना लो

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

ये मेरा भी हिन्दुस्तां है

NRC/CAB

कानून के ख़िलाफ एहतेजाजि कलाम

ये मेरी भी सर-ज़मीन और मेरा भी आसमां है
अब साबित ये करना है ये मेरा भी हिन्दुस्तां है

ये वकत की साज़िशें हैं और हालात पुर-फितन !
शोर हर तरफ बरपा है ये मेरा भी हिन्दुस्तां है

उफ़, में कौन हूं क्या अब तुम्हें बताना होगा ?
ये नस्ले खुने-जिगर ये मेरा भी हिन्दुस्तां है

उम्रे तमाम हो गईं जिस खा़के-दिल-नशीं पर
ये खा़क है हमारी ये मेरा भी हिन्दुस्तां है

साहिबे ईमां की कब्र से गर कफ़न हटा के देखो
सीने पे लिखा मिलेगा ये मेरा भी हिन्दुस्तां है

दास्ताने ज़ुल्म ये केह रही है तुम मजलूमे-ज़माना हो
और ज़ालिम ये केह रहा है ये मेरा भी हिन्दुस्तां है

क्या रब के हुजुर तुमने खुद को रूजू किया है ?
अब रो रो के केह रहे हो ये मेरा भी हिन्दुस्तां है

गैसो-ख्वाजा का सदका़ इलाही कुछ तो अता हो
क़रारे कल्बो-जिगर हो ये मेरा भी हिन्दुस्तां है

यही वकत है शाकिर हुक्मे-खुदा मानो तो सही
वरना केह ना सकोगे ये मेरा भी हिन्दुस्तां है

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

(रूबाई) कल जो हक़ीक़त थी

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

कल जो हक़ीक़त थी आज ख्वाब बन गई
इक तारीख़ के पन्नों की किताब बन गई
ये किस मोड़ पर ज़िन्दगी ने खड़ा करदिया
कैसे हिसाब दूं, वो हिसाब बन गई

कैसे कैसे आते हैं ख़रीदार यहां
क्या खूब तमाशा है सरे-बाज़ार यहां !
खिलौना लेकर बैठा हूं या खिलौना बनकर
शबो-रोज़ बिकता है मेरा वक़ार यहां

किस कलम से अपनी दास्ताने सोज़ लिखूं
इस हालते-ज़ार का क्या निशाने सोज़ लिखूं
अश्के सियाही खुश्क हो गई लिखते हुए
क्या हुआ, कैसे हुआ, क्या जाने सोज़ लिखूं

बड़ी शान से खरीद-था जो घर के लिए
आज वही सामां बेच रहा हूं घर के लिए
ये वकत ने कैसी करवट ली है शाकिर
अब इंतज़ारे रेहमत में हूं घर के लिए

हज़ारों लोग हैं लेकिन ...

हज़ारों लोग हैं लेकिन तन्हा चल रहा हूं मैं
मंज़िल नज़र नहीं आती लेकिन चल रहा हूं मैं

जो कैदे-फानूस में रेह कर रौशनी देता है
इक दिए की मानिंद मुसलसल जल रहा हूं मैं

शमाए-लौ थर-थरा रही है बुझने से पेहले
ये शाम महफ़िल, और धीरे ढल रहा हूं मैं

खुदा का वास्ता मरने से पेहले मरने ना दो
इक बर्फ जैसे हर लम्हा पिघल रहा हूं मैं

ये कौनसा तूफां साहिल पे दस्तक दे रहा है
बे-खौ़फ आती लेहरों से क्यूं दहेल रहा हूं मैं

इक अजीब सा गुमां था किरदारे शाकिर पर !
शायद किसी पर्दे से निकल रहा हूं मैं

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर



फसाद (कत्लो-ग़ारत का तमाशा)

ख़िराजे-अक़ीदत: दिल्ली के दंगों में हुए शहीदों के नाम

(फयाज़ मुहम्मद – शाकिर)

Tribute to Delhi Riots _ Feb-2020

शोलों में लिप्टी हुई दुकानें देख रहा हूं
नफ़रत की उठती हुई तलवारें देख रहा हूं

ईंटों से पत्थरों से घर बन्ते है मगर
यहां ज़ख्म खती हुई आवाज़ें देख रहा हूं

वाह ! क्या खूब तमाशा है सरे-बाज़ार यहां
हर तरफ बिखरी हुई लाशें देख रहा हूं

मज़हब के नाम पर वो करते हैं सियासत यहां
घर इक है मगर कई दीवारें देख रहा हूं

अपने ही खून में लिपटी औलाद को देख कर
चाके-जिगर करती हुई माएं देख रहा हूं

अदावत के शॉलों ने यहां सब कुछ मिटा दिया
घर घर से उठती हुई आहें देख रहा हूं

तू कितनी ख़ुं-रेज़ियां करेगा ज़मीं पे मगर
आस्मां से होती नाज़िल वो बलाएं देख रहा हूं

उफ़, फित्ना फसाद झगड़े क्या हसिले ज़िन्दगी है !
दर्दो-कर्ब में सेहमी हुई राहें देख रहा हूं

ख़ाके-वतन एक है हम दोनों में फिर क्यूं ?
तुझ में तशदुद की वो निगाहें देख रहा हूं

ऐ खुदा इक नई सुबह ख़ैर का आगाज़ करा दे
अब दम घोंटती मुल्क की हवाएं देख रहा हूं

क्या ख़त्म होगा शाकिर ये कत्लो-ग़ारत का तमाशा ?
अब गली कुंचों से उठती हुई दुआएं देख रहा हूं

लम्हाते ज़िंदगी

लम्हाते ज़िंदगी को ऐसे गंवा रहा है
जैसे खुद ही को खुद मिटा रहा है

इक बर्फ जैसी पिघल रही है ज़िन्दगी तेरी
और तू ज़माने की खुशियां मना रहा है

सजदे में तेरा सर झुकता नहीं मगर
और तू दुनिया को निचे झुका रहा है

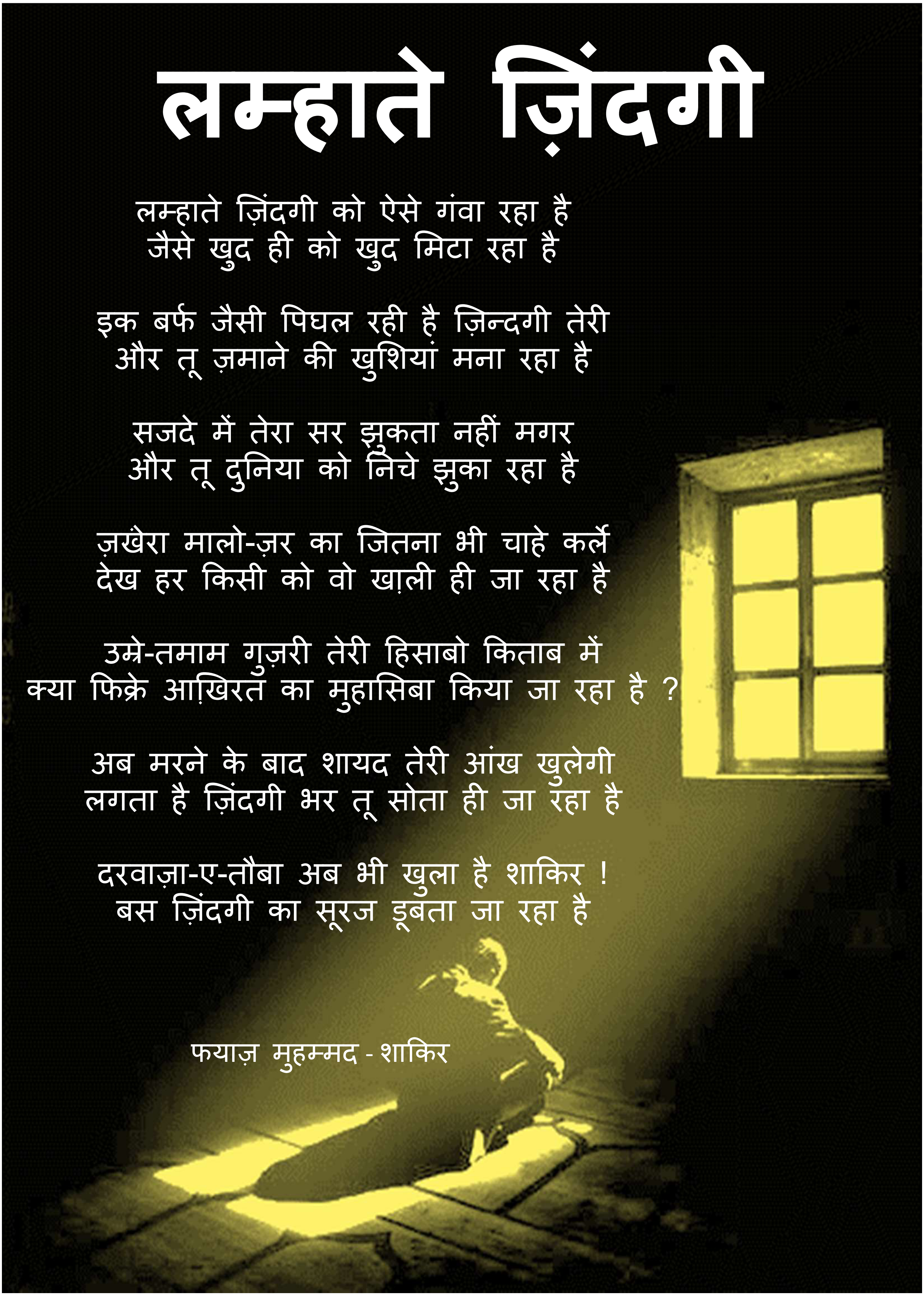
ज़खैरा मालो-ज़र का जितना भी चाहे करले
देख हर किसी को वो खा़ली ही जा रहा है

उम्रे-तमाम गुज़री तेरी हिसाबो किताब में
क्या फिक्रे आख़िरत का मुहासिबा किया जा रहा है ?

अब मरने के बाद शायद तेरी आंख खुलेगी
लगता है ज़िंदगी भर तू सोता ही जा रहा है

दरवाज़ा-ए-तौबा अब भी खुला है शाकिर !
बस ज़िंदगी का सूरज डूबता जा रहा है

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर



कोरोना वाइरस का मर्ज़ और हालाते हाज़रा

मौजे तूफां को क़रीब आते देख रहा हूं
अब सब कुछ अपना बिखरते देख रहा हूं

इक बांध बनाया था किनारे पर मैंने
अब सामने उसे टूटते देख रहा हूं

क्या इस आफतो-बला का अहसास नहीं तुझे
अब हर किसी को चलते फिरते देख रहा हूं

घर में रेहकर इस तूफां से कैसे बचें
अब मुहल्लों के जनाजें उठते देख रहा हूं

अस्पताल से ज़्यादा राशन की क़तारें हैं यहां
अब ज़िन्दगी और भुक को लड़ते देख रहा हूं

नफ़रत की सियासत में मज़हब निशाना बनते हैं
अब रास्तों पर हिन्दू मुस्लिम लड़ते देख रहा हूं

ये गिर्या-ओ-ज़ारी सब की ज़बां पे है मगर
अब खुश्क आंखों को रोते देख रहा हूं

हालात साज़गार होने में कित्ना वक्त लगेगा ?
अब शबो रोज़ हौसले टूटते देख रहा हूं

कल की अज़ाने वक्त को तुम तो भूल ही गए थे
अब गली कूंचो से अज़ां सुनते देख रहा हूं

फज़्ले-खुदा ही शाकिर इस बे-बसी का आसरा है
अब दुआ में हाथों को उठते देख रहा हूं

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर



शिक्वा कभी ना करना

हुक्मे-ख़ुदा के आगे शिक्वा कभी ना करना
मोमिन हो तुम हमेशा, शिक्वा कभी ना करना

कश्ती-ये-ज़िन्दगी में आसां नहीं हैं रस्ते
सब्र तुम्हें है करना, शिक्वा कभी ना करना

मोमिन की ज़िन्दगी तो है शाने बे-नियाज़ी
शुक्रे-ख़ुदा ही करना, शिक्वा कभी ना करना

हक़े-बंन्दगी यही है सर को झुकाए रखना
नाकामो-नातावं सही शिक्वा कभी ना करना

सब्रे-हुसैन देखो मैदाने-कर्बला में
दुश्मन हो कोई कैसा शिक्वा कभी ना करना

रब की रज़ा में राज़ी हर पल रहो हमेशा
बे-जा कभी ना केहना, शिक्वा कभी ना करना

जो कुछ मिला ख़ुदा से ये उसकी करम नवाज़िश
तू बन जाए उसका शाकिर, शिक्वा कभी ना करना

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

शमा जला के देख...

शमा जला के देख धुवां किसे केहते हैं
आंसू बहा के देख हिचकियां किसे केहते हैं

साहिल पे बैठे करते हो बातें तुफां की
समन्दर में आके देख तुफां किसे केहते हैं

यूं बेरूख़ी से मुझ पे ऐ मुस्कुराने वाले
नम आंखों से देख सिस्कियां किसे केहते हैं

फक़त अफसाने पढ़ने से ये एहसास नहीं होगा
खुद तारीख़ बन के देख दास्तां किसे केहते हैं

हक़ तल्फी हो किसी की ये शेवय-मोमिन नहीं
हके बन्दगी तो देख मुसलमां किसे केहते हैं

गली कुंचों में शमशिरे-हुनर बहुत आज़मा लिए
तन्हा उतर के देख जंगे-मैदां किसे केहते हैं

यूं घर बैठे ज़िन्दगी जीना महाल है शाकिर
ठोकरें खा के देख कारवां किसे केहते हैं

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर